17 अक्टूबर 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान महावीर अपनी वीतरागता, सर्वज्ञता और हितोपदेशिता के कारण पूज्य हैं, कोई लौकिक चमत्कारों और सन्तान धनादि देने के कारण नहीं।
ह्न सत्य की खोज, पृष्ठ-21

वर्ष : 32, अंक : 14 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल हीरक जयन्ती समारोह आयोजन समिति द्वारा आयोजित ह्न

डॉ. भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह

जयपुर : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के मध्य दिनांक 4 अक्टूबर को सायंकाल हीरक जयन्ती समारोह आयोजन समिति द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह आयोजित किया गया। लगभग 3 घण्टे तक अविरल चले इस समारोह में संपूर्ण देश के सहस्राधिक लोगों की उपस्थिति रही।

(बायें से दायें- आयोजन समिति के महामंत्री श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, मंत्री श्री महेन्द्रजी पाटनी जयपुर, श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर, प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री तेजकरणजी डंडिया जयपुर, टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, तीर्थक्षेत्र कमेटी बुन्देलखण्ड के अध्यक्ष श्री कमलजी जैन झांसी, श्री प्रदीपजी जैन (ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार), सम्माननीय विद्वान डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल, अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी के अध्यक्ष श्री एन.के.सेठी, माननीय खिल्लीमलजी जैन (नि:शक्तजन आयुक्त, राज. सरकार), श्री पवनजी जैन मंगलायतन-अलीगढ, श्रीमंत सेठ डालचन्दजी जैन सागर (पूर्व सांसद), भारतीय ज्ञानपीठ से पुरस्कृत उड़ीसा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री डॉ.सत्यव्रतजी शास्त्री दिल्ली एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल।

मंचासीन अतिथि ह्न इस अवसर पर आयोजित विशाल सभा की अध्यक्षता श्री एन.के.सेठी (अध्यक्ष, श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी) ने की। मुख्यअतिथि के रूप में माननीय श्री प्रदीपकुमारजी जैन (ग्रामीण विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार) मंचासीन थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में सम्मानमूर्ति डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, माननीय श्री खिल्लीमलजी जैन (नि:शक्तजन आयुक्त, राजस्थान सरकार), पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल (प्राचार्य, टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय), श्री तेजकरणजी डंडिया (प्रसिद्ध शिक्षाविद्), श्री पवनजी जैन मंगलायतन-अलीगढ, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (मंत्री-आयोजन समिति), श्री डालचन्दजी जैन सागर (पूर्व सांसद), भारतीय ज्ञानपीठ से पुरस्कृत उड़ीसा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति पद्मश्री डॉ. सत्यव्रतजी शास्त्री दिल्ली, श्री कमलकुमारजी जैन झांसी एवं श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल मंचासीन थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती ज्योति जैन जयपुर के मंगलाचरण से हुआ।

इस अवसर पर **श्री तेजकरणजी डंडिया जयपुर** ने 42 वर्ष पहले डॉ. भारिल्ल के जयपुर आने से जुड़े अनेक संस्मरण सुनाते हुये उनका संक्षिप्त परिचय दिया। **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** ने गुरुदेवश्री एवं डॉ. भारिल्ल से जुड़े लगभग 40 वर्षों पुराने मार्मिक संस्मरण सुनाये। जयपुर दूरदर्शन/रेडियो कलाकार **श्रीमती मालती जैन जयपुर** ने काव्य पाठ के माध्यम से दादा के उपकारों को प्रस्तुत किया।

डी.लिट् की उपाधि ह्न अलीगढ से पधारे श्रीमान् पवनकुमारजी मंगलायतन ने अपने उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल की प्रशंसा करते हुये आगामी 28 अक्टूबर को मंगलायतन विश्वविद्यालय के द्वारा डी.लिट् की उपाधि प्रदान करने की घोषणा की।

विशिष्ट सम्मान ह्न श्री प्रदीपकुमारजी जैन (ग्रामीण विकास एवं राज्यमंत्री भारत सरकार) का श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने तिलक, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने माल्यार्पण, श्री राजकुमारजी काला ने शॉल, श्री मिलापचन्दजी डंडिया ने श्रीफल, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने साफा एवं श्री नरेशकुमारजी सेठी ने प्रशस्ति पत्र से सम्मान किया। **(शेष पृष्ठ-8 पर...)**

मंत्रीजी का सम्मान करते हुये श्री एन.के.सेठी, श्री महेन्द्रकुमार पाटनी, श्री अशोक बड़जात्या एवं श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल

सम्पादकीय –

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु (38)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

तत्त्वार्थसूत्र में आये १. संयम, २. श्रुत, ३. प्रतिसेवना, ४. तीर्थ, ५. लिंग, ६. लेश्या, ७. उपपाद और ८. स्थान ह्न इन आठ अनुयोगों द्वारा पुलाकादि मुनियों के कौन–कौनसे अनुयोग होते हैं? यह कहते हैं ह्न

संयम ह्न पुलाक, बकुश, और प्रतिसेवना कुशील साधुओं के सामायिक और छेदोपस्थापना संयम होते हैं। कषाय कुशील साधु के सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि और सूक्ष्मसाम्पराय संयम होते हैं। निर्ग्रन्थ और स्नातक के एक यथाख्यात संयम ही होता है।

श्रुत ह्न पुलाक, बकुश और प्रतिसेवनाकुशील ह्न साधुओं के उत्कृष्टतम ज्ञान दशपूर्व का होता है तथा कषायकुशील और निर्ग्रन्थ साधु चौदह पूर्व के धारी होते हैं, जघन्यज्ञान की अपेक्षा पुलाक मुनि को (आचारवस्तु) ५ समिति, ३ गुप्ति का ज्ञान होता है; बकुश, कुशील तथा निर्ग्रन्थों के जघन्यज्ञान अष्ट प्रवचनमाता, (५ समिति, ३ गुप्ति) का ज्ञान होता है और स्नातक तो केवली होते ही हैं।

प्रतिसेवना ह्न प्रतिसेवना का अर्थ विराधना है। पुलाक मुनि के पाँच महाव्रतों में से किसी एक व्रत में परवशता से विराधना हो जाती है। यद्यपि महाव्रतों में मन–वचन–काय तथा कृत–कारित–अनुमोदना से पाँच पापों का त्याग होता है; तथापि अपनी सामर्थ्य की हीनता से पुलाक के किसी भेद में दोष लग जाता है।

तीर्थ ह्न सभी तीर्थंकरों के धर्मशासन में पाँचों प्रकार के मुनि होते हैं।

लिंग ह्न लिंग के दो भेद हैं ह्न १. द्रव्यलिंग और २. भावलिंग। पुलाक, बकुश आदि पाँचों प्रकार के मुनि भावलिंगी ही होते हैं; क्योंकि वे सम्यग्दर्शनसहित संयम पालने में तत्पर–सावधान होते हैं। शरीर की ऊँचाई, रंग व पीछी आदि की अपेक्षा बाह्यलिंग में उनमें अन्तर होता है। कोई आहार करता है, कोई अनशनादि तप करता है, कोई उपदेश करता है, कोई अध्ययन करता है, कोई ध्यान करता है, कोई तीर्थों में विहार करता है, किसी को कोई दोष लगता है, कोई प्रायश्चित लेता है, कोई दोष नहीं लगने देता है, कोई आचार्य है, कोई उपाध्याय है, कोई निर्यापक है, कोई वैयावृत्य करता है, कोई श्रेणी आरोहण करता है, कोई केवलज्ञान उत्पन्न करता है ह्न इत्यादि प्रवृत्ति से बाह्यलिंग में अन्तर होता है। यथाजातरूप नग्न दिगम्बरपना सभी के है, इसमें भेद नहीं है।

लेश्या ह्न पुलाक, बकुश व प्रतिसेवना कुशील मुनियों के अंतिम तीनों शुभ लेश्याएँ ही होती हैं, इनके बाह्य प्रवृत्ति का अवलम्बन नहीं रहता है, वे अपने मुनिपने के साधन में ही लीन रहते हैं। कषाय कुशील के कापोतादि चार लेश्याएँ होती है। अन्य आचार्यों के अभिप्राय से इनके तीन शुभ लेश्याएँ ही होती हैं। निर्ग्रन्थ और स्नातक के एक शुक्ल लेश्या ही होती है। अयोगी जिन लेश्यारहित होते हैं।

उपपाद ह्न पुलाक मुनि का उत्कृष्ट उपपाद जन्म सहस्त्रार नामक बारहवें स्वर्ग में १८ सागर की उत्कृष्ट आयु के धारक देवों में होता है। बकुश और प्रतिसेवना कुशील मुनि का जन्म उत्कृष्ट देवों में होता है। कषाय कुशील और ग्यारहवें उपशान्तमोह गुणस्थानवाले निर्ग्रन्थ मुनियों का उत्कृष्ट उपपाद जन्म ३३ सागर की आयुवाले सर्वार्थसिद्धि के देवों में होता है। इन सभी पुलकादि ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती तक मुनियों का जघन्य उपपाद दो सागर की आयुवाले सौधर्म–ईशान देवों में होता है। बारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थ एवं स्नातक को तो निर्वाण ही होता है।

स्थान ह्न साधुओं के कषायनिमित्तिक असंख्यात संयमस्थान होते हैं। पुलाक और कषाय कुशील के सबसे जघन्य लब्धिस्थान होते हैं। वे दोनों असंख्यात स्थानों तक एक साथ जाते हैं।

द्रव्यलिंग–भावलिंग का स्वरूप बताते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न ''जो श्रमण द्रव्यलिंगसहित भावलिंग को धारण करते हैं, वे भाव की प्रधानता से भावलिंगी श्रमण कहलाते हैं तथा जो श्रमण भावलिंग रहित मात्र द्रव्यलिंग धारण करते हैं, वह द्रव्यलिंगी श्रमण कहलाते हैं।''

आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने स्वयं भावलिंगी साधु का वर्णन करते हुए लिखा है ह्न 'जो देहादि परिग्रह और मानकषाय से रहित हैं एवं अपनी आत्मा में लीन रहते हैं; वे साधु भावलिंगी हैं।

भावलिंगी मुनि के भाव इसप्रकार होते हैं कि मैं परद्रव्य और परभावों से ममत्व को छोड़ता हूँ। मेरा निजभाव ममत्वरहित है, उसको अंगीकार कर मैं उसमें स्थित हूँ। अब मुझे आत्मा का ही अवलम्बन है, अन्य सभी को मैं छोड़ता हूँ। **(क्रमशः)**

बारहवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन बापूनगर में दिनांक 27 सितम्बर से 6 अक्टूबर, 09 तक बारहवें आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर का आयोजन किया गया। शिविर उद्घाटन के समाचार विगत अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं ।

शिविर में प्रतिदिन के कार्यक्रमों की शुरुआत गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों से होती थी।

मुख्य प्रवचन ह्न शिविर में प्रतिदिन सी.डी. प्रवचनों के पश्चात् ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 64 वीं से 68 तक मार्मिक प्रवचन हुये। आपके प्रवचन से पूर्व एक–एक दिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित शिखरचन्दजी जैन विदिशा के प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि कालीन मुख्य प्रवचनों में प्रतिदिन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ मिला। आपके प्रवचनों के पूर्व एक–एक प्रवचन पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित कमलेशजी मौ एवं डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर का हुआ।

सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त महाविद्यालय के छात्र विद्वानों के विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

शिक्षण कक्षायें ह्न पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल द्वारा निमित्तोपादान, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली द्वारा नयचक्र (द्रव्यार्थिक–पर्यायार्थिक नय), पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार (कर्त्ताकर्म अधिकार), पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर कक्षायें ली गईं।

प्रौढ कक्षा (प्रात: ६.०० से ६.४० तक) ह्न पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, डॉ.दीपकजी एवं पण्डित कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर का लाभ मिला। इसके तत्काल बाद 6.40 से 7 बजे तक जी–जागरण टी.वी.चैनल पर आने वाला डॉ. भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में ही बड़े पर्दे पर किया जाता था, जिसे सभी शिविरार्थी अत्यंत रुचिपूर्वक सुनते थे।

दोपहर में 1:30 से 2 बजे तक बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित रमेशचन्दजी लवाण, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, डॉ. नीतेशजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री कहान, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित परेशजी शास्त्री जयपुर आदि विशिष्ट विद्वानों द्वारा व्याख्यानमाला एवं प्रवचन हुआ।

विशिष्ट कार्यक्रम ह्न महाविद्यालय के छात्रों द्वारा **हमारे आदर्श छोटे दादा** विषय पर गुरुवार, दिनांक 1 अक्टूबर को दोपहर 2.00 बजे एक संगोष्ठी रखी गई । दिनांक 2–3 अक्टूबर, दोपहर 2 बजे एक राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी **जैन अध्यात्म को डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का अवदान** विषय पर आयोजित की गई। श्री टोडरमल स्नातक परिषद का तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन 2 अक्टूबर को रखा गया। 4 अक्टूबर दोपहर 2 बजे अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का राजस्थान प्रांतीय सम्मेलन आयोजित किया गया एवं सायंकाल हीरक जयन्ती समारोह आयोजन समिति और जयपुर जैन समाज द्वारा विश्वस्तर पर डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह आयोजित किया गया।

सांयकालीन बालकक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया मुम्बई के निर्देशन में किया गया।

शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री जमनालाल कैलाशचन्द प्रकाशचन्द चेतनलाल एवं रतन सेठी परिवार जयपुर तथा आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती सुनीता ध.प. श्री प्रेमचंदजी बजाज सुपुत्र तन्मय ध्याता बजाज कोटा, स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता, श्री गौरव–पूजा जैन सुपुत्र श्री परितोषवर्धन जैन जनता कॉलोनी, श्री राहुल–सुनीता जैन सुपुत्र श्री महेन्द्रकुमारजी गंगवाल श्याम नगर जयपुर एवं श्री चिद्रूपबेलजी भाई शाह मुम्बई थे।

शिविर के परम सहायक बनने का सौभाग्य श्रीमती मंजुलाबेन कविनचंद्र परीख मुम्बई तथा कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट (ढाई द्वीप जिनायतन) इन्दौर को मिला।

शिविर में आयोजित नवलब्धि विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमार बजाज कोलकाता, स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रतनदेवी पाटनी सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता, स्व. श्री संतोषकुमार राजकुमार जैन की स्मृति में उनकी ध.प. श्रीमती रीता जैन एवं सुपुत्र श्री सौरभ जैन फिरोजाबाद थे।

6 अक्टूबर को प्रात: शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की। शिविर में लगभग 15,721 रुपयों का सत्साहित्य तथा 14,320 घंटों के डी.वी.डी. व सी. डी. घर–घर पहुँचे। वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथ प्रदर्शक के अनेक नवीन सदस्य बनें। ●

हीरक जयन्ती समारोह : विशिष्ट उद्‌बोधन

जयपुर (राज.)/ 4 अक्टूबर, 2009 : डॉ.हुकमचन्द भारिल्ल की हीरक जयन्ती के अवसर पर बोलते हुए पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली ने कहा कि संपूर्ण समाज जानता है कि **गुरुदेवश्री कानजी स्वामी द्वारा जिनागम का जो रहस्य उद्‌घाटित किया गया है, उसको सही रूप में ग्रहण करनेवाला वर्तमान में यदि कोई है तो वे हैं डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल।**

डॉ. भारिल्ल ने पूज्य गुरुदेवश्री का न केवल आशीर्वाद प्राप्त किया; अपितु उन्होंने डॉ. साहब की पुस्तकों की अपने प्रवचनों में मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। डॉ. भारिल्ल ने अपनी लेखनी, अपने तर्कों और अपनी वाणी से गुरुदेवश्री का ऐसा अटूट विश्वास जीता था कि जब दीपावली के अवसर पर सभी लोग उन्हें नारियल भेंट करते थे, तब उन्होंने एक बड़े आकार का श्रीफल मंगाया और डॉ. भारिल्ल को देते हुये कहा कि **लो यह मोक्ष का श्रीफल है। लोग मुझे श्रीफल भेंट करते है, पर मैं आज तुम्हें श्रीफल भेंट कर रहा हूँ।** यह कहकर उन्होंने डॉ. साहब का अभिनन्दन किया, भरपूर आशीर्वाद दिया।

यह सब देखकर वहाँ की सारी सभा आश्चर्यचकित रह गई, वह दृश्य मेरी आँखों में आज भी झूलता है।

इसीतरह बड़ौदा पंचकल्याणक में प्रवचन के बीच में ही श्रोताओं के बीच बैठे डॉ. साहब से कहा **तुम वहाँ क्यों बैठते हो, यहाँ आओ, मेरे पास पाट पर बैठो, हमेशा यहीं बैठा करो ह्न इसप्रकार कहकर अपने पास पाट पर बिठाया।** वस्तुत: बात यह है कि **दादा (डॉ.साहब) को गुरुदेवश्री का धर्मपुत्र होने का गौरव प्राप्त है।**

उन्होंने अनेकों बार कहा कि इसने क्रमबद्धपर्याय लिखकर समाज पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

डॉ. साहब की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कितने ही आँधी–तूफान क्यों न आवे, वे अपने संकल्प से विचलित नहीं होते।

मैंने परसों टोडरमल स्मारक परिषद के अधिवेशन में बोलते हुये कहा था कि इस उम्र में भी वे स्वास्थ्य की परवाह किये बिना अपने लक्ष्य की पूर्ति में निरन्तर लगे रहते हैं। यह हमारे लिये अनुकरणीय है।

आदरणीय डंडियाजी ने 100 वर्ष तक जीने की भावना भाई है; मैं वर्षों की गिनती तो नहीं करता, पर भावना भाता हुआ उस मंगल घड़ी की प्रतीक्षा करूंगा कि जब 1008 वाँ शिष्य (शास्त्री) पास होकर उनके चरण छूयेगा और वे उसे आशीर्वाद देंगे। ●

जयपुर (राज.)/ 4 अक्टूबर, 2009 : मंगलायतन, अलीगढ से पधारे श्री पवन जैन ने अपने भाषण में कहा कि आँख उठाकर देखें तो **सम्पूर्ण विश्व में जैनधर्म से संबंधित जितना साहित्य डॉ. भारिल्ल ने लिखा है, उतना साहित्य किसी अन्य के द्वारा नहीं लिखा गया। पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के बाद उतने प्रवचन भी किसी अन्य ने नहीं किये होंगे, जितने डॉ. भारिल्ल ने देश–विदेश में किये हैं।**

दुनिया कुछ भी क्यों न कहे, पर यह सच्चाई है कि परमपूज्य गुरुदेवश्री के नाम को विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाने में डॉ.भारिल्ल का जो योगदान है, वह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं।

मैंने जब इनकी लिखी पुस्तकों की एक–एक प्रति मंगवाई तो पूरे तीन बंडल आ गये। एक–एक प्रति भी तीन बंडलों में आ पाई, जो आज भी मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति के ऑफिस में लगी हुई हैं।

मैं एक बहुत महत्त्वपूर्ण घोषणा करने इस अवसर पर आया हूँ। उक्त घोषणा करने के पूर्व मंगलायतन के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, मंगलायतन के संस्थागत ट्रस्टी भाई श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई और सदस्य श्री आदीशजी दिल्ली को भी स्टेज पर बुलाना चाहता हूँ, जिससे मैं उनकी साक्षी में यह महत्त्वपूर्ण घोषणा कर सकूँ।

तालियों की गडगडाहट के बीच उन्होंने घोषणा की कि **मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ ने इस वर्ष डॉ. भारिल्ल को डी. लिट. की उपाधि से अलंकृत करने का फैसला किया है।** यह उपाधि 28 अक्टूबर 2009 को मंगलायतन विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर दी जावेगी। उक्त अवसर पर आप सब भी सादर आमंत्रित हैं। जो भाई आना चाहें, वे हमें पहले सूचना अवश्य कर दें, जिससे उनकी समुचित व्यवस्था की जा सके।

क्या आप जानते हैं कि जैन समाज में किसी विद्वान को यह मानद उपाधि पहली बार दी जा रही है।

मैं इस अवसर पर एक बात और भी कहना चाहूँगा कि जब हमने डॉ. भारिल्ल से उस व्याख्यान का आलेख मांगा तो जो आलेख हमें प्राप्त हुआ, उसमें तीन बार **आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के नाम का उल्लेख था।** डॉ. भारिल्ल ने उसमें लिखा कि यह मेरा सम्मान नहीं है, उस जिनवाणी का सम्मान है, जिसकी सेवा मैंने की है, उन पूज्य गुरुदेवश्री का सम्मान है, जिनसे यह तत्त्वज्ञान मुझे प्राप्त हुआ है, यह सम्मान पूरी जैन समाज का है कि जिसने मुझे अपने हृदय में बिठा रखा है।

डॉ. भारिल्ल को डी.लिट. की उपाधि देकर मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ अपने को धन्य अनुभव कर रहा है। ●

हीरक जयन्ती समारोह : विशिष्ट उद्‌बोधन

मुख्य–अतिथि के रूप में बोलते हुये केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' ने कहा कि **इस कार्यक्रम में जिनके अभिनन्दन के लिये हम लालायित हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व में मानवता को एक दिशा दिखाई है, जिन्हें हम युगपुरुष भी कह सकते हैं, युगविचारक भी कह सकते हैं, जिन्होंने बुन्देलखण्ड की पवित्र धरा को गौरवान्वित किया है; उन सरलता और सहजता के धनी श्रद्धेय डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने पूज्य गुरुदेवश्री के बाद मानव दर्शन के लिये दिशा देने का जो महान कार्य किया है, उसका कोई सानी नहीं है।**

जब हीरे किसी खदान में पडे रहते हैं तो उन्हें कोई नहीं जानता, कोई नहीं पहिचानता; पर जब वे ही हीरे किसी चतुर जौहरी के द्वारा तराशे जाते हैं, तो उनकी चमक सभी को चकाचौध कर देती है। उसीप्रकार **आपने जैन धर्म के अध्येता विद्वानों के क्षेत्र में अनेक हीरे तराशे हैं; जब वे समाज में जाते हैं और समाज उन्हें सुनता है तो अचम्भित होकर रह जाता है। श्रद्धेय भारिल्लजी आपने गजब का कार्य किया है।**

समाज में ईंट–पत्थर की संस्थायें तो बहुत बन जाती है, लेकिन **डॉ. भारिल्ल एक व्यक्ति नहीं, चलती–फिरती संस्था है। उन्होंने जो कार्य किया है, वह अद्वितीय है।** मुझे वह दिन याद आता है, जब हम पाठशाला में जाते थे और डॉ. साहब की लिखी पुस्तकें उन्हीं के द्वारा तराशे हुये विद्वानों से पढते थे। हमारी मम्मी आरंभ से ही बहुत धार्मिक रही और इस टोडरमल स्मारक से जुड़ी रहीं। वे हम लोगों से कहती थीं कि डॉ. साहब की बालबोध पाठमालायें पढो, वीतराग–विज्ञान पाठमालायें पढो; वे पुस्तकें हम पढते थे। वे बहुत ही रोचक थीं। जीव क्या है ? अजीव क्या है ? आदि बातें उनमें बहुत अच्छी तरह समझायी हैं। आज हमें उन्हीं डॉ.साहब की हीरक जयन्ती में आने का मौका मिला, उससे हम जीवन भर अनुगृहीत रहेंगे।

हम चाहते हैं कि **डॉ. भारिल्ल जी इन प्रकाश किरणों को केवल जैनसमाज तक ही सीमित नहीं रहने दें, अपितु देश–विदेश में करोडों जैन–अजैन लोगों तक पहुँचायें।** अनेक जाति और अनेकों सम्प्रदायों के करोडों लोग आप जैसे विद्वानों को सुनने–समझने के लिये छटपटाते रहते हैं, भटकते रहते हैं, कभी किसी शिविर में चले गये, कभी किसी शिविर में चले गये ह्न इसप्रकार भटकते रहते हैं। **जिनको आपने शिक्षा दी है, वे आपके विद्यार्थी भी हमारे पूज्य पण्डितजी हैं, उन्हें सुनकर भी हम बहुत लाभान्वित होते हैं। हम चाहते हैं कि अन्य समाजवाले लोग भी आपके दर्शन और प्रवचन से अपना कल्याण करें।**

मैं इस हीरक जयन्ती के अवसर पर आपके चरणों में नमन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि आप दीर्घायु हों, यशस्वी हों, आपके विचारों की कीर्ति, आपके ज्ञान का वैभव केवल इस देश में ही नहीं, केवल जैनसमाज में ही नहीं; सभी देशों और सभी समाजों में; उसीप्रकार फैले जैसे अभी यहाँ फैल रहा है।

राज्यमंत्री का दर्जाप्राप्त नि:शक्तजन आयोग के अध्यक्ष श्री खिल्लीमलजी एडवोकेट ने कहा कि **जैनदर्शन को विश्व मैं फैलाने के लिये साहित्य सृजन के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में डॉ. साहब की जो छाप है, वैसी अन्य किसी की नहीं।** मेरी दृष्टि में उन जैसा कोई दूसरा पैदा ही नहीं हुआ। डॉ. साहब ने जो पुस्तकें लिखी हैं, वे सारे विश्व में संजीवनी का कार्य करनेवाली हैं।

सब जगह से निराश होकर जब कोई डिप्रेशन का मरीज मेरे पास आता है तो मैं उसे **डॉ. साहब की क्रमबद्धपर्याय नामक पुस्तक देता हूँ और कहता हूँ कि इसे एकबार नहीं, अनेक बार पढना।** लोगों को लाभ होता है। इसप्रकार मैं सैंकडों पुस्तकें बांट चुका हूँ, जो उसे पढता है, वह यही कहता है कि **जब सबकुछ निश्चित है तो चिन्ता किस बात की।**

आपकी जो देन है, सारी मानव जाति पर जो उपकार है, वह अतुलनीय है। मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि उनका सम्पूर्ण साहित्य एक वेब–साइट पर आना चाहिये। विदेशों में दिगम्बर मुनिराज तो जाते नहीं, पर डॉ. साहब ने विदेशों में जाकर जो धार्मिक जागृति लाई है, वह उनके बिना संभव नहीं थी।

ऐसा महान उपकार डॉ. भारिल्ल ने किया है, इसलिये मैं उन्हें बारंबार नमन करता हूँ।

समारोह में मंच संचालन करते हुये श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर ने कहा कि ह्न

डॉक्टर साहब आपमें शक्ति है,
आपकी वाणी में ताकत है।
आपका अध्ययन एवं चिंतन तलस्पर्शी है, अजेय है।
समन्तभद्र की तर्कशक्ति आपको प्राप्त हुई है,
आपके व्यक्तित्व को विराटता प्राप्त हुई है।
आप अगम बुद्धि के धारक हैं,
साधर्मी वात्सल्य आपको प्रकृति प्रदत्त है,
तत्वप्रचार के लिये आप आजीवन समर्पित रहे हैं।
सम्पूर्ण जैन समाज ही नहीं, सम्पूर्ण धार्मिक समाज के उन्नयन के लिये आज यहाँ उपस्थित **यह जनमेदिनी आपसे आव्हान करती है,कि जीवन के इस दौर में स्वामीजी जो विरासत आपको सौंप कर गये हैं– उसे खुले हाथों से लुटाइये और बांटिये।**
बगैर किसी भी प्रकार के वर्ग भेद के आप स्वतंत्र हैं,
उड़ान भरने के लिये।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 38

नौवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तीर्थंकर जन्म से ही अतुल्यबल के धारी होते हैं, वज्रवृषभनाराच संहनन के धारी होते हैं। तात्पर्य यह है कि उनका शरीर इतना मजबूत होता है कि वज्र का प्रहार भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं कर सकता। तीर्थंकर नेमिनाथ के पैर को नारायण भी नहीं हिला सके थे। अरे, भाई! उनकी कोई उंगली भी नहीं मोड़ सकता। साधारण से देव के उपसर्ग से तीर्थंकर पार्श्वनाथ का क्या होनेवाला था, वे तो अपने में पूर्ण सुरक्षित थे।

यदि वे पैर की उंगली भी दबा देते तो कमठ का मद चूर हो जाता। पर वे तो अपने में मगन थे, आत्मध्यान में लवलीन थे, क्षपक श्रेणी में आरोहण कर रहे थे। यदि ऐसा नहीं होता तो उन्हें अन्तर्मुहूर्त में ही केवलज्ञान कैसे हो जाता ?

यद्यपि यह सत्य है कि कमठ के जीव ने उन पर उपसर्ग किया था और धरणेन्द्र-पद्मावती को उपसर्ग दूर करने का भाव आया था; तथापि यह ठीक नहीं है कि उक्त उपसर्ग से उन पर कोई बड़ा संकट आ गया था और यदि धरणेन्द्र-पद्मावती न आते तो न मालूम क्या हो जाता ? क्योंकि वे तो अपने में पूर्ण सुरक्षित थे ही; उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए अन्य के सहयोग की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं थी। शास्त्रों में आता है कि ह्न

कमठे धरणेन्द्रे च सोचितं कर्म कुर्वती।
प्रभु तुल्य: मनोवृत्ति: पार्श्वनाथ: नमोस्तु ते ।।

कमठ ने अपनी कषाय के अनुसार उपसर्ग और धरणेन्द्र ने अपने भक्तिभाव के अनुसार उसके निवारण के प्रयास किये। यह कार्य उनके राग-द्वेषानुसार उचित ही थे; क्योंकि द्वेषवालों को उपसर्ग और रागवालों को उसके निवारण का भाव आना उचित ही है। किन्तु वीतराग धर्म की आराधना करनेवाले पार्श्व मुनिराज के चित्त में दोनों के प्रति समान भाव था, समता भाव था; न तो उन्हें कमठ से द्वेष था और न धरणेन्द्र से राग; वे तो पूर्ण वीतरागता की ओर तेजी से बढ रहे थे।

यही कारण है कि हम सब पार्श्वनाथ को नमस्कार करते हैं। यदि वे कमठ से द्वेष और धरणेन्द्र से राग करते तो फिर हममें और उनमें अन्तर ही क्या रहता, फिर हम उन्हें पूजते भी क्यों ?

इस छन्द में कमठ और धरणेन्द्र की चर्चा तो है; पर पद्मावती के नाम का उल्लेख नहीं है। इससे भी यही प्रतीत होता है कि उपसर्ग निवारण में धरणेन्द्र ही प्रमुख थे। फिर भी न मालूम क्यों उनकी उपेक्षा हुई ? यह प्रश्न चित्त को आन्दोलित करता ही है।

जब लोग ऐसा बोलते हैं कि यदि धरणेन्द्र-पद्मावती समय पर नहीं पहुँचते तो न मालूम क्या हो जाता ? तब मुझे बड़ा अटपटा लगता है।

अरे, भाई ! यदि धरणेन्द्र-पद्मावती नहीं पहुँच पाते तो क्या होता का प्रश्न ही कहाँ खड़ा होता है; क्योंकि वही होता; जो होना था, हुआ था। उन्हें केवलज्ञान होने का समय आ गया था, वे उसे प्राप्त करने के अभूतपूर्व पुरुषार्थ में संलग्न थे, पाँचों ही समवाय केवलज्ञान होने के थे सो केवलज्ञान हो गया। यह उपसर्ग तो उसमें निमित्त भी नहीं था; क्योंकि उसमें अंतरंग निमित्त तो चार घातियों का क्षय था, अभाव था।

यह बात तो ऐसी लगती है कि जैसे एक भारतकेसरी नामी पहलवान बाजार में जा रहा था कि सामने से एक आठ वर्ष का बालक आया और उस बालक ने उस पहलवान की पिटाई आरंभ कर दी; इतने में एक दस वर्ष का बालक आया और उसने उसे बचा लिया। यदि दस वर्ष का बालक नहीं आता और बचाता भी नहीं तो न मालूम आज क्या हो जाता ?

जब मैं ऐसा कह रहा था तो एक भाई बोले ह्न

अरे, भाई ! आपको झूठ बोलना भी ढंग से नहीं आता। इतना बड़ा सफेद झूठ। क्या आठ वर्ष का बालक किसी भारतकेसरी पहलवान को मार सकता है, बाल हठ के कारण कुछ हाथ-पैर चलाये भी तो क्या बिगड़ता है इतने बड़े पहलवान का ?

८ वर्ष का बालक मार रहा था और १० वर्ष के बालक ने बचा लिया, अन्यथा न मालूम क्या हो जाता ? ह्न यह बात जिसप्रकार विश्वसनीय नहीं लगती; उसीप्रकार कमठ का जीव मार रहा था और धरणेन्द्र-पद्मावती ने बचा लिया, अन्यथा न जाने क्या हो जाता ह्न यह बात भी हृदय में आसानी से नहीं उतरती।

मैं आपसे ही पूछता हूँ ह्न क्या हो जाता ? क्या उस पहलवान के हाथ-पैर टूट जाते, उसे अस्पताल जाना पड़ता, क्या उसकी मृत्यु भी हो सकती थी ?

अरे, भाई ! कुछ नहीं होता। उस पहलवान का तो कुछ नहीं होता, पर उस बालक के हाथ में दर्द अवश्य हो जाता, हाथ में मोच भी आ सकती थी। हो सकता है कि उस बालक को अस्पताल ले जाना पड़ता।

अरे, भाई ! पहलवान की तो व्यायाम भी नहीं हो पाती; क्योंकि वह तो प्रतिदिन अपने बराबरी के पहलवान से अभ्यास करता है, उसके प्रबल प्रहार करनेवाले मुक्के खाता है। बालक के आक्रमण से उसका कुछ भी बिगड़नेवाला नहीं था, वह तो अपने आप में सुरक्षित ही था। उसे बचाने वाले दश वर्ष के बालक के सहयोग की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं थी।

इसीप्रकार क्या कमठ के उपसर्ग से पार्श्वनाथ क्षत-विक्षत हो जाते, उन्हें कोई बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ती ?

नहीं, नहीं; ऐसा कुछ भी नहीं होता। अतुल्य बल और वज्रवृषभ-नाराचसंहननवाले पार्श्वनाथ मुनिराज को तो कुछ नहीं होता; पर कमठ को तीव्रतम पापबंध अवश्य होता, हुआ भी होगा और उसका फल उसे आगे चलकर भोगना ही होगा।

कमठ के आक्रमण से पार्श्व मुनिराज का कुछ भी बिगड़नेवाला नहीं था, वे तो अपने आप में सुरक्षित ही थे। उन्हें धरणेन्द्र-पद्मावती के सहयोग की भी रंचमात्र आवश्यकता नहीं थी।

ऐसा भी हो सकता है कि वह अबोध बालक, उसी पहलवान का पुत्र हो और किसी बात पर बिगड़ कर उत्तेजना में उसने अपने पहलवान पिता पर हाथ उठा दिया हो और उसके ही बड़े भाई ने उसके अविनयपूर्ण व्यवहार से उसे रोक दिया हो; पर यह पहलवान पिता को तो एक कौतूहल ही है।

वह दस वर्ष का बालक यह अच्छी तरह जानता होगा कि आठ वर्ष के बालक के आक्रमण से उसके पहलवान पिता का कुछ भी बिगड़नेवाला नहीं है, अपितु बालक को चोट अवश्य लग सकती है; अत: हम यह भी कह सकते हैं कि उसने अपने पिता को नहीं बचाया था, अपितु अपने छोटे भाई को पिता की अविनय करने रूप दुष्कर्म से बचाया था, उसे स्वयं को लगनेवाली चोट से बचाया था; इसप्रकार उसने पिता का नहीं, भाई का उपकार किया था।

वह पहलवान पिता न तो मारनेवाले बालक से नाराज ही होता और न बचानेवाले बालक से प्रसन्न; उसका दोनों के प्रति समभाव ही रहता है, वह तो दोनों को पुचकारता ही है, समझाता ही है।

इसीप्रकार अन्तरोन्मुखी मुनिराज पार्श्वनाथ पर हुए उपसर्ग की घटना भी एक कौतूहल से अधिक कुछ नहीं है। वे पार्श्वनाथ मुनिराज न तो कमठ से नाराज हुए और न धरणेन्द्र-पद्मावती से प्रसन्न। दोनों के प्रति समानभाव ही उनका समताभाव था, जिसके बल पर वे आगे बढते गये और अतीन्द्रियानन्द प्राप्त कर पूर्ण वीतरागी-सर्वज्ञ बन गये। **(क्रमश:)**

शोक समाचार

1. **जयपुर लाल कोठी निवासी श्रीमान् जमनालालजी सेठी** का दिनांक 12 अक्टूबर, 09 को प्रात: 90 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप प्रारंभ से ही धार्मिक विचारों के सरल व्यक्ति थे। आपके ही धार्मिक संस्कारों के कारण आज आपका पूरा परिवार तत्त्वज्ञान से जुड़ा हुआ है। गुरुदेवश्री की उपस्थिति में आप अनेक बार सोनगढ जाकर तत्त्व लाभ लिया करते थे। श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं अन्य सभी सहयोगी संस्थाओं से चलने वाली तत्त्वप्रचार–प्रसार की गतिविधियों की मुक्त कंठ से प्रशंसा किया करते थे। पंचकल्याणक, वेदी प्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा, शिक्षण–शिविर, जीर्णोद्धार आदि कार्यों में आपका विशेष आर्थिक सहयोग रहता था।

ज्ञातव्य है कि आप श्री कैलाशचन्दजी सेठी, श्री प्रकाशचन्दजी सेठी, श्री चेतनजी सेठी व श्री रतनजी सेठी के पिताजी एवं महाविद्यालय के स्नातक श्री संजयजी सेठी के दादाजी थे।

आपके आकस्मिक निधन से श्री टोडरमल स्मारक परिवार एवं सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

2. **अकलूज निवासी श्री शांतिनाथ सोनाज** का दिनांक–4 अक्टूबर 09 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया है। आप बहुत स्वाध्यायी थे। टोडरमल स्मारक की गतिविधियों की आप बहुत सराहना करते थे तथा भरपूर सहयोग प्रदान करते थे। जयसिंगपुर में प्रशिक्षण शिविर आपके ही सहयोग से लगाया गया था। जयपुर में लगने वाले शिविरों में भी आप सदैव उपस्थित रहते थे।

3. **भीलवाड़ा निवासी** श्री निहालचन्द अजमेरा, श्री पद्मकुमार अजमेरा के भाई एवं श्री महेन्द्र अजमेरा के पिताजी **श्री दिलसुखरायजी अजमेरा** का दिनांक 12 सितम्बर 09 को 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया है। आपने मरणोपरांत नेत्रदान भी किया है। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से वीतराग–विज्ञान व जैनपथप्रदर्शक में 250–250/– रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद ।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो ह्न यही भावना है।

पुस्तक प्रकाशन ह्न अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन महानगर शाखा जयपुर द्वारा डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती के प्रसंग पर एक **शिखर पुरुष** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया, जिसका विमोचन माननीय प्रदीप जैन (ग्रामीण विकास राज्य मंत्री) ने किया।

इस लघु पुस्तक में डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के संक्षिप्त परिचय के साथ–साथ साधु–सन्तों, विद्वान मनीषियों एवं राजनेताओं की दृष्टि में डॉ. भारिल्ल कैसे हैं ? ह्न यह उल्लेख किया गया।

जयपुर (राज.) : यहाँ आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर के अवसर पर वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल, बापूनगर द्वारा दिनांक 1 अक्टूबर को सायंकाल बाबूभाई सभागृह में श्रीमती इन्द्राबेन मुम्बई की अध्यक्षता में ज्ञान पहेली कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती शशीजी तोतूका एवं श्रीमती अनुश्री जैन ने किया।

स्नातक परिषद् का अधिवेशन सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ शिविर के अवसर पर दिनांक 2 अक्टूबर 2009 को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। सभा की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री प्रकाशचन्दजी सेठिया सरदारशहर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अम्बरीशजी जैन (आई.आर.एस.–एडिशनल कमिश्नर) लुधियाना एवं श्री मुकेशजी जैन इंदौर मंचासीन थे। विशिष्ट विद्वानों में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा मौजूद थे।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुनीलजी शास्त्री ग्वालियर ने किया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई एवं डॉ. अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ के मार्मिक उद्बोधनों एवं सुझावों का लाभ मिला।

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक सुझावों एवं मंगल आशीर्वचन का लाभ मिला।

इस प्रसंग पर डॉ. अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ द्वारा लिखित शोध पुस्तक 'समयसार का दार्शनिक परिशीलन' का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने तथा मंगलाचरण कु. परिणती पाटील ने किया।

युवा फैडरेशन राज. प्रान्तीय सम्मेलन

जयपुर : यहाँ दिनांक 4 अक्टूबर को दोपहर में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के राजस्थान प्रान्तीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता राज.प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जयपुर जिला कलेक्टर श्री कुलदीपजी रांका (जैन) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री देव कोठारी उदयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्री आदीशजी जैन दिल्ली आदि मंचासीन थे।

अतिथियों का स्वागत प्रदेश उपाध्यक्ष श्री अजितजी शास्त्री अलवर ने किया। मंगलाचरण अलवर शाखा से श्री विकासजी जैन एवं विपिनजी जैन ने किया।

इस अवसर पर बांसवाड़ा की रिपोर्ट श्री गणतंत्रजी शास्त्री, उदयपुर की रिपोर्ट डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, जयपुर की रिपोर्ट डॉ. भागचन्द जैन शास्त्री एवं अलवर शाखा की रिपोर्ट एवं आगामी योजनाओं को अलवर शाखा के अध्यक्ष श्री शशीभूषणजी जैन ने प्रस्तुत किया।

विशिष्ट अतिथियों एवं अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् अन्त में आभार प्रदर्शन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

(हीरक जयन्ती समारोह पृष्ठ–1 का शेष...)

सम्मानमूर्ति तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का श्री कमलजी जैन झांसी ने तिलक, श्री नरेशकुमारजी सेठी ने माला, श्री तेजकरणजी डंडिया ने साफा, श्री अशोककुमारजी बड़जात्या ने शाल, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने श्रीफल एवं श्री प्रदीपजी जैन (राज्यमंत्री) ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया।

इसके अतिरिक्त **राष्ट्रीय संस्थाओं में** श्री दिगम्बर जैन महासमिति से **श्री पद्मचंदजी सेठी जयपुर**, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् दिल्ली से **डॉ.राजेन्द्रकुमारजी बंसल** (संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री), श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् दिल्ली से **श्री पी.सी.रांवका जयपुर**, दि. जैन सोश्यल ग्रुप फैडरेशन से **श्री हुकमचन्द शाह बजाज इन्दौर**, अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ से **श्री अखिलजी बंसल जयपुर**, हूमड़ जैन समाज की ओर से **श्री हंसमुख जैन गांधी इंदौर** (राष्ट्रीय अध्यक्ष), तारणतरण समाज से **श्री डालचन्दजी सागर**, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ से **श्री पवनजी जैन अलीगढ**, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा से **श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा**, पूज्य श्रीकानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली से **श्री उल्लासभाई जोबालिया मुम्बई**, शासन प्रभावना ट्रस्ट(ढाई द्वीप जिनायतन) इन्दौर से **श्री मुकेशजी जैन इन्दौर**, तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि से **मा.चन्द्रभान जैन द्रोणगिरि**, चैतन्यधाम अहमदाबाद से **श्री सतीश अमृतलाल मेहता** फतेपुर/अहमदाबाद, टोडरमल स्नातक परिषद् से **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** आदि ने डॉ.भारिल्ल का सम्मान किया।

प्रांतीय संस्थाओं में राजस्थान जैन सभा से **श्री कमलबाबू जैन जयपुर**, राजस्थान प्रांतीय भारत जैन महामण्डल से **श्री सम्पतकुमारजी गदैया जयपुर**, दि. जैन महासमिति राज.अंचल से **श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी**, दि.जैन सोश्यल ग्रुप फैडरेशन राज.से **श्री सुरेन्द्रकुमारजी पांड्या**, राज.जैन युवा महासभा से **श्री प्रदीप जैन**, जैन डाक्टर्स फोरम राजस्थान से **डॉ. जी.सी.सोगानी**, राजस्थान प्रान्तीय महिला भारत जैन महामण्डल से **श्रीमती स्वयंप्रभा गदैया जयपुर** आदि ने डॉ.भारिल्ल का सम्मान किया।

स्थानीय संस्थाओं में श्री दि.जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय से **श्री रमेशचन्दजी पापड़ीवाल**, आई.एस.आई. विश्वविद्यालय गांधी विद्यामन्दिर सरदारशहर से **श्री प्रकाशजी जैन सेठिया**, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर से **श्री सुशीलकुमारजी गोदीका**, रतन चेरिटेबल ट्रस्ट सरदारशहर से **श्री अभयकरणजी** एवं **श्री सुबोधजी सेठिया**, दि.जैन मंदिर लश्कर इंदौर से **श्री क्रान्तिकुमारजी पाटनी इंदौर**, दि.जैन एकता मंच से **श्री अशोकजी लुहाड़िया जयपुर**, जैन अनुशीलन केन्द्र से **डॉ.पी.सी.जैन**, दि.जैन समाज बापूनगर संभाग से **डॉ.राजेन्द्रजी जैन**, पार्श्वनाथ दि.जैन चैत्यालय से **श्री ताराचन्दजी पाटनी**, अरहंत केपिटल इंदौर से **श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल**, जैन सोश्यल ग्रुप हवामहल से **श्री पवनकुमारजी बज**, मंगलमार्ग मोहल्ला विकास समिति से **श्री कैलाशचन्द वैद्य**, पिंकसिटी श्योशल न्यूज से **श्री राकेशजी गोधा**, दिग.जैन सर्वोदय स्वाध्याय समिति शाहुपुरी कोल्हापुर से **ब्र.यशपालजी जयपुर**, वीतराग विज्ञान महिला मंडल बापूनगर से **श्रीमती कमलाजी भारिल्ल**, जैन नवयुवक मंडल शहपुर बेलगाँव से **श्री रामकस्तूरे बेलगाँव**, जिनागम एवं श्रमण संस्कृति संरक्षण संवर्धन न्यास ग्वालियर से **श्री रवीन्द्रजी मालव ग्वालियर**, भक्तामर मंडल इंदौर से **श्री पूरणचन्दजी जैन** आदि ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

डॉ.भारिल्ल को अभिनन्दन–पत्र भेंट करते हुये श्री प्रदीपजी जैन एवं श्री अशोकजी बड़जात्या; साथ में हैं–पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, श्री तेजकरणजी डंडिया, श्री एन.के. सेठी, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल एवं श्रीमती कमला भारिल्ल।

दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री हुकमचन्दजी जैन शाह बजाज इन्दौर एवं फैडरेशन ऑफ हुम्मड दि. जैन समाज के अध्यक्ष श्री हंसमुखभाई गाँधी इन्दौर डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन करते हुये।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का सम्मान श्रीमती मालती जैन ने माल्यार्पण, श्रीमती सुशीला जैन ने शॉल ओढाकर तथा श्रीमती स्वयंप्रभा गदैया ने श्रीफल देकर किया। इसके पश्चात् शताधिक लोगों ने व्यक्तिगतरूप से सम्मान किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अशोकजी बडजात्या इन्दौर ने किया।

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127